LIBRARY

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE, BHOPAL

S.No. 05 MAY 2023

दैनिक भास्कर - Page – 2 30/05/2023

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर ने की शहर की ट्रैफिक समस्याओं की स्टडी

12 साल में पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर ₹450 करोड़ खर्च, लेकिन सिर्फ 5% लोग कर रहे इस्तेमाल

शहर में अब भी 35% लोग खुद की गाड़ी से चलते हैं

इंफ्रास्ट्रक्चर रिपोर्टर | भोपाल

वर्ष 2011 में 247 करोड़ रुपए खर्च करके शुरू हुए बीआरटी कॉरिडोर में लो फ्लोर बसें इस सपने के साथ शुरू की गईं थीं कि लोग अपनी बाइक और कारों की बजाय इनमें चलना शुरू करेंगे। शहर के पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर 2011 से अब तक 450 करोड़ रुपए से अधिक की राशि खर्च हो चुकी है। लेकिन 2011 में 35 प्रतिशत लोग खुद की गाड़ी का इस्तेमाल करते थे। आज 12 साल बाद भी शहर में इतने ही लोग खुद की गाड़ी से चल रहे हैं। यानी सड़कों पर गाड़ियों की भीड़ कम नहीं हुई। आज भी सिर्फ 5% लोग ही पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह है, 5 किमी तक लो फ्लोर बस से जाने में 25 मिनट लगते हैं, जबकि खुद की गाड़ी से इतनी ही दूरी केवल 10 मिनट में पूरी हो जाती है।

यह निष्कर्ष स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) की एक रिपोर्ट में सामने आया है। एसपीए ने शहर की पूरी ट्रैफिक व्यवस्था पर स्टडी की है। इसमें रोड नेटवर्क, पार्किंग, शहर के भीतर आने वाले भारी वाहन, ब्लेक स्पॉट, चौराहों की ज्यामेट्री में गड़बड़ी, सड़कों पर फुटपाथ की स्थिति आदि शामिल हैं।

5 किमी सफर लो फ्लोर से 25 मिनट में और निजी वाहन से 10 मिनट में

▪ रिपोर्ट बताती है कि भोपाल में प्राइवेट गाड़ियों की एवरेज स्पीड 30-35 किमी प्रतिघंटा है और एवरेज जर्नी स्पीड 25-30 किमी प्रति घंटा है। लो फ्लोर बस के मामले में एवरेज स्पीड 28-40 किमी प्रति घंटा और एवरेज रनिंग स्पीड 12-20 किमी प्रति घंटा है। एवरेज रनिंग स्पीड के हिसाब से 5 किमी के सफर की गणना करें तो लो फ्लोर बस से ढाई गुना समय लगता है।

भास्कर एक्सपर्ट

लास्ट माइल कनेक्टिविटी और रिलायबिलिटी के बिना सफल नहीं हो सकता पब्लिक ट्रांसपोर्ट

-डॉ.मयंक दुबे, असि. प्रोफेसर, एसपीए (ट्रैफिक एंड ट्रांसपोर्ट)

मिनी बस और टैंपो को बंद कर लो फ्लोर बसें चलाईं। जो लोग पहले मिनी बस और टैंपो में चलते थे वे ही अब लो फ्लोर बसों में चल रहे हैं। अपनी कार और बाइक से चलने वाले 35% लोग आज भी अपनी गाड़ियों का ही उपयोग कर रहे हैं। जबकि बीआरटीएस और लो फ्लोर बसों का उद्देश्य ही यह था कि लोग पब्लिक ट्रांसपोर्ट को अपनी पहली पसंद के रूप में उपयोग करें और बहुत जरूरी होने पर ही खुद की गाड़ी का। यानी कम से कम 50 से 60 प्रतिशत लोग पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें, 30-40 प्रतिशत लोग पैदल या साइकिल जैसे नॉन मोटराइज्ड ट्रांसपोर्ट से ही अपनी जरूरतें पूरी कर लें और शहर की सड़कों पर अपनी गाड़ियों से चलने वालों की संख्या 10-20 प्रतिशत रह जाए। लेकिन यह नहीं हुआ क्योंकि हमारा पब्लिक ट्रांसपोर्ट लास्ट माइल कनेक्टिविटी नहीं दे सका। रिलायबिलिटी की कमी है यानी बस कब मिलेगी इसका कोई ठिकाना नहीं है।